Post-Harappan Caleolithic culture.

B.A. ... paper

उत्तर हड़प्पा ताम्रपाषाण संस्कृति

पूर्व में यह संस्कृति परवर्ती हड़प्पीय संस्कृति के नाम से विख्यात थी, जिसमें मुख्य रूप से गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति का प्रतिपादन किया जाता था। परन्तु विद्वानों के निरन्तर शोध के फलस्वरूप इस तथ्य का पुष्टीकरण हुआ कि मो- झूकर एवं हड़प्पा नामक स्थलों पर उत्तरकाल में भी हड़प्पीय लक्षण विद्यमान थे। हड़प्पीय लक्षणों के उत्तर काल में उपस्थिति के कारण विद्वानों ने परवर्ती हड़प्पीय संस्कृति के स्थान पर उत्तर-हड़प्पीय संबोधन प्रारम्भ किया।

यह संस्कृति प्रौढ़ हड़प्पीय संस्कृति के अन्तिम चरण एवं नवीन संस्कृति के प्रारम्भिक चरण से सम्बन्धित है। साथ ही पूर्व हड़प्पीय संस्कृति से परवर्ती है। प्रौढ़ संस्कृति काल में क्रमबद्धता को प्रदर्शित करती है। प्रौढ़ संस्कृति काल की नगर योजना, विशाल भवनों का निर्माण, माप-तौल के विभिन्न स्वरूप, लिपि का प्रचलन आदि इस काल में दृष्टव्य नहीं हैं किन्तु कुछ क्षेत्रों में समानताएँ भी देखने को मिलती हैं। जैसे- पात्र प्रकार। इस काल में कुछ नये साक्ष्य भी उपलब्ध होने लगते हैं। परवर्ती हड़प्पा संस्कृति के लक्षण सर्वप्रथम सौराष्ट्र (राजस्थान) में कुछ नये साक्ष्य भी उपलब्ध होने लगते हैं। इस प्रकार के अवशेष से प्रकाश में आए। कालान्तर में इस प्रकार के अवशेष पंजाब एवं पश्चिमी उत्तर-प्रदेश, गुजरात एवं हरियाणा, महाराष्ट्र से भी प्राप्त हुए। शोध के मतानुसार हड़प्पीय नगरीकरण, निवास क्षेत्र, जनसंख्या, खाद्य उत्पादन, भवन के निर्माण में ह्रास, लिपि समाप्ति, सुदूर-व्यापार में अवनति के कारण केन्द्रीय शासन में पतन प्रदर्शित होता है। इस संस्कृति के कम संगठित, कम विकसित समाज के अवशेषों की प्राप्ति के कारण पोसेल ने इसे परवर्ती की संज्ञा दी है। कुछ विद्वानों ने इसे नगर हड़प्पीय का ह्रासोन्मुखी (Degenerated Harappa culture) कह कर पुकारा है।

सांस्कृतिक प्रसार → इस संस्कृति से संबन्धित स्थल भारतवर्ष के अतिरिक्त अन्य देशों से भी प्राप्त होते हैं। इनमें दो प्रकार के मुख्य स्थल हैं- उत्खनित स्थल एवं सर्वेक्षण के फलस्वरूप प्राप्त स्थल। ये स्थान मुख्य रूप से उत्तर-भारत के विभिन्न प्रदेशों में फैले हुए हैं। जिनमें जम्मू काश्मीर, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र एवं पश्चिमी उत्तर-प्रदेश के क्षेत्र मुख्य हैं।

Scanned with CamScanner

भारतीय भू-भाग के बाहर इस संस्कृति के अवशेष पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान के क्षेत्रों में भी प्राप्त होते हैं। पाकिस्तान के स्थलों में झूकर, आमरी, हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, गान्धार ग्रेव, पीरक एवं मेहरगढ़ सिमेट्री मुख्य हैं जबकि अफगानिस्तान में इस संस्कृति से सम्बन्धित स्थलों में मुण्डीगाक, स्नेचुण्डई, मोतुण्डई एवं शाही-तुम्प आदि महत्वपूर्ण हैं।

मृद्भाण्ड :→ उत्तर हड़प्पीय स्तरों से प्रौढ़ हड़प्पीय काल से-भिन्न पात्र परम्परा का आविर्भाव होता है विभिन्न स्थलों पर जैसे मीताथाल, मिर्जापुर, दौलतपुर, आलमगीरपुर, बड़गाँव एवं हुलास आदि से हड़प्पीय स्तरों के उपरान्त उत्तर हड़प्पीय संस्कृति के अवशेष उपलब्ध होते हैं। इस संस्कृति में हस्त-निर्मित पात्रों की उपलब्धि विशेष उल्लेखनीय है। भगवानपुरा पर उत्तर हड़प्पीय पात्र परम्पराओं में मुख्य हैं एवं चित्रित धूसर मृद्भाण्ड। इसके मुख्य पात्र प्रकारों में तश्तरियाँ, मटके, छिद्रिक पात्र, नये प्रकार की साधारण तश्तरियाँ, जार, ढक्कन आदि हैं। इस काल के अन्तिम चरणों में चमकीले लालपात्र (Lustrous Redware) एवं कृष्ण लोहित मृद्भाण्ड (Black and Red ware) भी प्राप्त होने लगते हैं।

अन्य पुरा सामग्रियाँ → इस काल की पुरा सामग्रियों की कमी है। इस काल में पूर्व काल की तरह छिद्रित वृत, बाट, एवं बर्तन चमकाने का पत्थर नहीं प्राप्त होते हैं। पाषाण उपकरणों में सिल, लोढ़े, हथौड़े, आदि प्राप्त होते हैं। उत्तर भारत में पत्थरों की कमी है परन्तु प्रयोग प्रचलित रहता है। मानवकृतियों का अभाव है। धातु उपकरणों में खरवानी, भाला, कुल्हाड़ी, चाकू, चूड़ियाँ एवं मछली के कांटे मुख्य हैं।

खाद्य-सामग्री → उत्तर हड़प्पीय काल में इन विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त प्राकृतिक वनस्पति भूमि उपजाऊ एवं उर्वरक होने के कारण रही होगी जिसमें विविध प्रकार के पशु निवास करते होंगे। प्राकृतिक वनस्पति से कन्द, मूल, फल एवं विभिन्न प्रकार के पशु आहार में भी होंगे। इसके अतिरिक्त हुलास से धान, गेहूँ, जौ, चना, मटर आदि उत्खनन से प्राप्त हुए हैं।

अन्त्येष्टि → इस काल में अन्त्येष्टि के प्रचलन का भी उदाहरण मिलते हैं। भगवानपुर से प्रथमबार शवों को निवास क्षेत्र में ही दफनाने की प्रथा ज्ञात होती है जो कि कालान्तर में

Scanned with CamScanner

(ताम्रपाषाण काल) एक प्रमुख विधि के रूप में विकसित होती हैं। लोग परलोक में विश्वास रखते थे। अतः शवों के साथ आवश्यक ही नहीं बल्कि- भोजन सामग्री भी रखी जाने लगी। कब्रों के ऊपर ईंट की चहारदीवारी बनने लगी। उत्खनन से इसी काल के मृदभाण्ड एवं अन्त्येष्टि सामग्री उपलब्ध होती है।

गंगाघाटी की ताम्र संस्कृतियाँ

- हड़प्पा संस्कृतियों के उपरान्त सम्भवतः कुछ संस्कृति का महत्व प्रदान की जाती है गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में प्रस्थापित संस्कृति गैरिक मृदभाण्ड संस्कृति के रूप में ज्ञात है। कई सतही स्थलों के साथ ही- इस क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण स्थलों का उत्खनन भी किया जा चुका है। इसमें मुख्य रूप से बहादराबाद, बड़गाँव, अम्बखेड़ी, हस्तिनापुर, आलमगीरपुर एवं नोह आदि हैं। गैरिक मृदभाण्ड के विभिन्न प्रकार के पात्र इस
- क्षेत्र की संस्कृति से ही संबंधित हैं जो पात्र प्रकार- गंगाघाटी से उपलब्ध होते हैं। इन मृदभाण्डों के साथ ही ताम्र निधियाँ भी मिलती हैं। इन अवशेषों की तिथि एवं स्वीकृत स्थिति ताम्र पात्रों की ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियों के समकक्ष है।

जिस समय परवर्ती हड़प्पा-संस्कृति सिन्ध के बाहर जीवित थी, उसी समय सिन्ध, राजस्थान पंजाब और मध्य प्रदेश में एक नई ताम्र पाषाण कालीन संस्कृति विकसित होने लगी जो हड़प्पा संस्कृति से भिन्न ग्राम संस्कृति जैसी प्रतीत होती है।

Scanned with CamScanner